हिन्दी साहित्यकार कमलेश्वर जी के पारिवारिक और सामाजिक स्वरूप का अध्ययन

रंजीत कुमार तिवारी (शोध छात्र) डा0 धनेश कुमार मीना (शोध निर्देशक)

विषय हिन्दी कला विभाग मंगलायतन विश्वविद्यालय वेसबा अलीगढ

सारांश, कमलेश्वर का संबंध सामंती परिवार से था अर्थात्र उनका परिवार संपन्न था। उनकी पारिवारिक स्थिति उनके जन्म तक अत्यंत ही समृद्ध था। लेकिन परिवार में मृत्यु के सिलसिले ने एक के बाद एक मुसीबत खड़ी करना शुरू कर दिया। इनके पिता की मृत्यु और उनके पांच भाइयों की मृत्यु उसके बाद जल्दी ही उनके बड़े भाई सिद्धार्थ की मृत्यु से इनका जीवन आधार बिल्कुल समाप्त हो गया, किसके सहारे अपना आगे का जीवन कैसे बिताएंगे ? इनका सबसे बड़ा भाई सिद्धार्थ अत्यंत बुद्धिजीवी था। वह निरंतर अपने बुरे दिन को सामर्थ् यवान बनाने में दिन – रात लगा था। कमलेश्वर और सिद्धार्थ दोनों एक ही स्कूल में पढ़ते थे, इसलिए एक लोगों की फीस आधी लगती थी किंतु होने को कौन टाल सकता है सिद्धार्थ की भी मृत्यु हो गई अब समस्त जिम्मेदारी कमलेश्वर के सिर पर आ गई पढ़ने – लिखने घर चलाने, सामाजिक स्टेटस, हर तरह से अब कमलेश्वर को ही मैंनेज करना था इस घटना से कमलेश्वर के दर्दिन में और बढ़ोत्तरी हो गई। कमलेश्वर जी कहते हैं कि" जब मैं दो भाई पढ़ने जाते थे तो फीस का भार कम होता था, एक ही लोगों की फीस लगती थी, तब दोनों लोग कुछ ना कुछ कार्य कर लेते थे तो हल्का महसूस होता था,"

मुख्य शब्द, कमलेश्वर, नैतिक, आदर्श, बुद्धिजीवी, आदर्शवादी आदि।

प्रस्तावना, कमलेश्वर प्रतिभा संपन्न बालकों में से थे जिन्हें ज्यादातर समस्याओं का समाधान स्वयं करना पड़ता था। वे कहते हैं कि मित्रों की नई–नई किताबें पढ़ने और उनके साधनों का मैं खूब इस्तेमाल करता था किंतु मैं दुनिया का इकलौता बालक तो था नहीं जो ताना – बाना से बच पाता। मुझे उन लोगों के साथ –साथ गुरु जी के कटूक्तियों को भी सुनना पड़ता था जो शायद नहीं सुनना चाहिए था फिर भी मर्यादा बस सहज ही स्वीकार कर लेते थे।" शोधार्थी को (मुझे) इस संदर्भ में एक बात तुलसीदास जी की याद आ गयी उनकी एक चौपाई इस तरह से है –

"मातु – पिता गुर प्रभु कै बानी।
बिनहिं बिचार करिअ सुभ जानी ॥

तुम्ह सब भाँति परम हितकारी ।
अग्या सिर पर नाथ तुम्हारी ।

कमलेश्वर जी ने उनकी यह चौपाई को चरितार्थ करते हुए नजर आते हैं इन्होंने स्वयं के मुसीबत से ही त्याग करने की भावना विकसित कर ली है। कमलेश्वर जी जैसे–जैसे बड़े हो रहे थे इन्हें भी रोटी, कपड़ा, मकान की फिक्र होने लगी थी। इनकी मां को सामाजिक स्तर बचाना था इसलिए रात को परिश्रम करके खाने का इंतजाम कर लेती और सुबह होते ही फिर साहूकार लोगों की तरह सज – धज कर रहती जिससे स्टेटस पर कोई फर्क भी ना पड़े। रात में मां जांत में गेहूं पीसती और अपने साडियों से कुर्ता योग्य साड़ी छांटकर कमलेश्वर के लिए कपड़े या कुर्ते बनाया करती और दिन में जमीदार बनने का दिखावा भी करना पड़ता। यह उनके सामाजिक स्तर की मजबूरी थी। जो करना पड़ता था । इनकी मां इनसे ज्यादा उनके सौतेले भाई का ख्याल रखती थी ताकि सामाजिक बुराइयां ना मिले। कमलेश्वर इतना समझदार था कि वह कभी अपनी मां से एक आने की रबड़ या पटरी के लिए पैसे नहीं मांगे। वे कहते हैं कि" रसोई में वह दोबारा रोटी नहीं मांगते थे" ऐसा कमलेश्वर का व्यक्तित्व था। एक बार उनकी मां ने दुष्यंत को बताया था कि कैलाश उनके घर का नाम था रोटी ना मांगने की बात भी मां ने दुष्यंत से ही बताई थी कि संकोचवस वह मुझसे भी नहीं मांगता था इनकी मां ने कहा है कि" मुझे जिंदगीभर अफसोस रहेगा कि मेरे बेटे ने मुझसे ही कभी रोटी या पैसा नहीं मांगा।" कमलेश्वर जब अकेले रह गए तो इस एकाकीपन का बड़ा मार्मिक वर्णन किया है।"सचमुच आदमी जब अकेला हो तो दुनिया बहुत बेरहम हो जाती है" जब तक सिद्धार्थ थे मेरी फीस आधी – आधी ही लगती थी लेकिन उनके जाने के बाद फीस अर्जी की माफी नामंजूर हो गई लेकिन कहते हैं ना देर है अंधेर नहीं कहावत को कमलेश्वर ने साकार करने की ठान ली। इतना पढ़ने में परिश्रम किया कि वह है कक्षा में अव्वल आते थे इस कारण उन्हें वजीफा मिलने लगा जिससे कुछ आत्मबल में इजाफा हुआ।

मित्रों का प्रभाव और व्यवहार कुशलता :– "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होता है " अरस्तू ने कहा था। इन्होंने अपने क्षेत्र के समाज से ही कथावस्तुओं को ग्रहण किया है इन पर समाज का प्रभाव भी देखने को मिलता है। इनमें दया, करुणा,सहिष्णुता,सहानुभूति एक–दूसरे के प्रति सदैव रही है। उनके मित्रों में मोहन राकेश,राजेंद्र यादव दुष्यंत कुमार व शांतनु आचार्य प्रमुख थे। इनमें कमलेश्वर और दुष्यंत कुमार विद्यार्थी जीवन के सहपाठी रहे हैं। दुष्यंत कुमार कमलेश्वर जी के बारे में कहते हैं कि" जिस जमाने में उसने लिखना शुरू किया था और जिस संघर्ष से निकलकर बाहर आया था उसने कमलेश्वर को अंतर्मुखी बना दिया। उसके उसे आदर्शवादी प्यार ने उसे बाद में चलकर और भी तोड दिया कमलेश्वर ने

जो लिखा है वह अपना जीवनानुभव को लिखा है। पढ़–पढ़ कर नहीं बल्कि उन्होंने उसे जिया है। इन्हें वार्तालाप करते समय पूर्वाभास जिस तरह होता है वैसे ही यह बात करते थे।

नई कहानी और कमलेश्वरः–नई कहानी आंदोलन का सूत्रपात करने वालों में राजेंद्र यादव, मोहन राकेश तथा कमलेश्वर मुख्य हैं। यही तीन लोग नई कहानी के पुरोधा एवं ध्रुवीय केंद्र बिंदु हैं। एक बार राजेंद्र यादव ने बताया कि कैसे कमलेश्वर से मेरा परिचय हुआ? वे कहते हैं कमलेश्वर से मेरा परिचय उन दिनों हुआ जब दुष्यंत कुमार मार्कंडेय और कमलेश्वर का त्रिशूल त्रिवेणी का त्रास बना हुआ था। इन तीनों में सबसे छोटे कद के साथ कुर्ता पजामा पहना लड़के से लगने वाले कमलेश्वर को ही मैं सबसे जिंदा दिल वार्ताला के रूप में पाया था। "कमलेश्वर के विषय में राजेंद्र यादव एक बात और कहते हैं कि वह साफ झूठ बोलता है यह उनकी एक विशिष्ट कला है ऐसा कहना गलत नहीं होगा। शांतनु आचार्य के कथन कमलेश्वर के संदर्भ में–"यह कमलेश्वर के बारे में कहते हैं मैं कमलेश्वर को एक समर्थ कवि मानता हूं जो शब्दों के द्वारा अपने अनुभवों को मूर्त रूप देता है और पात्रों स्थितियों तथा अर्थवत्ता के द्वारा कहानियो में ढालता है।" यह कहते हैं जो स्थान रूप में मैक्सिगोर्की का है वही स्थान भारत के राष्ट्रीय साहित्य में कमलेश्वर के साहित्य की चमक है। कमलेश्वर जी ने अपने जीवन में जो भी अनुभव किया उसे कथा साहित्य जगत में विभिन्न तरीके से पिरोया है।

कमलेश्वर जी की कृतियाँ और कार्यक्षेत्र :–कमलेश्वर की भाषा शैली स्पष्ट, सहज एवं जन सामान्य की भाषा शैली है। इनमें कहीं न कहीं बचपन की परिस्थितियों का प्रभाव जमकर था। इन्हें जिम्मेदारियों ने स्वत: कहानीकार, आलोचक समीक्षक, उपन्यासकार तथा नाटककार बना दिया। इन्हें छोटे से छोटे कार्यों को करने के लिए सूक्ष्मता से विचार करना पड़ता था जिसका असर उनके मन मस्तिष्क में विद्यमान हो गया। समीक्षकों द्वारा उनके बारे में यह जानकारी मिलती है कि यह जन्मजात कहानीकार थे। इनमें घटनाक्रम, विषय वस्तु को कैसे जोड़ना है? किस तर पिरोना है? इसके कथानक का परिणाम क्या होगा? इसे तर्क की कसौटी पर कैसे सिद्ध करना है? इन्हें ईश्वरीय शक्ति प्राप्त थी, ऐसा कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा। इनकी तुलना मुंशी प्रेमचंद से की जाती है। कहा जात है" जिस तरह मुंशी प्रेमचंद को कथा लिखने का गुण प्राप्त था वैसे ही कमलेश्वर में भी लक्षण परिणाम स्वरूप दर्शन होते हैं, "कमलेश्वर विभिन्न विधाओं में मर्मज्ञ जान पड़ते हैं क्योंकि समस्त विधाओं को इन्होंने अपने लेखन कला में समाहित कर लिया है इनमें विषम परिस्थितियों को अनुकूल करने की अद्वितीय कौशल था। इनका साहित्य हिंदी संसार की अमूल्य धरोहर है जिसकी प्रासंगिकता युगों युगों तक अमर

रहेगी, इन्हें सत्य का उद्घाटन करने में मजा बहुत आता था यही कारण है कि यह इतनी ऊंचाइयों तक सफल हो सके। इनमें लेखन का केंद्र जीवन की यथार्थता होती थी। जन सामान्य के मनो संवेदना, बाह्यसंवेदना की परख थी। यह लिखते समय पूर्वाग्रहों को भूल जाते थे इन्हें जो टिप्पणी वास्तविक लगती उसे अवश्य ही अपनी विधा में समाहित करते। उनकी कथा साहित्य में संवेदना के पुट भरपूर दर्शनीय है सामाजिक मूल्यों में संवेदना की अहम भूमिक को जरूर उकेरते थे। इनका सर्वप्रथम कथा लेखन अपने क्षेत्र मैनपुरी उत्तर प्रदेश से ही होती है नके कहानी उपन्यास व केंद्र बिंदु निश्चित वर्ग जो आसपास के हुआ करते हैं। विकासवादी दृष्टिकोण की प्रधानता थी इन्हें कस्बाई निम्न वर्ग, मध्यवर्ग, वैशम्य में शोषण, सामाजिक असमानता, प्रमुख रूप से इन्हीं में से शीर्षक चुनते थे। इनमें प्रगतिशील, यशपाल या नागार्जुन जैसी राजनीति सिद्धांतो की प्रधानता नहीं होती बल्कि जीवन संघर्षों में जन्मी विचारधारा प्रत्येक मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी की है। कमलेश्वर की कहानी दो धाराओं में प्रवाहित होती है एक तो कस्बे और देहात परिवेश में दूसरा महानगरीय परिवेश वातावरण मे किंतु उन्होंने मेरी प्रिय कहानी कथा संग्रह एवं कहानीकार कमलेश्वर संदर्भ और प्रकृति में लेखन के तीन समय बताए हैं।

कमलेश्वर की कथा यात्रा, सन 1952 – 58–59 तक। इस समय के दौरान इन्होंने मुर्दों की दुनिया, आत्मा की आवाज, राजा निरबंसिया, देवा की माँ, भटके हुए लोग, कस्बे का आदमी, गर्मियों के दिन, एक अश्लील कहानी, अकाल, पीला गुलाब आदि। इन सभी कहानियों की सर्जन मैनपुरी तथा इलाहाबाद के मध्य हुई कमलेश्वर की पहली कहानी "कामरेड " जो एटा से प्रकाशित होने वाली "अप्सरा" पत्रिका में छपी थी यहीं से उनकी कहानी लेखन की यात्रा शुरू हुई थी इससे ही अनुभव क्षेत्र की प्रामाणिक पहचान मिलती है। सन 1959–60 से 1966 तक। इस दौर में व्यक्ति के दारुण और विसंगत संदर्भों के परिप्रेक्ष्य को समझना। इसके अंतर्गत प्रमुख कहानी दिल्ली में मौत, मांस का दरिया, जॉर्ज पंचम की नाक, तलाश खोई हुई दिशाएं आदि लिखी गयी यह सभी कहानियां दिल्ली में लिखी गई इसलिए इन कहानियों में नगरीय जीवन का प्रभाव है। सन 1966 से 1972 ई तक यातनाओं के जंगल से गुजरते मनुष्य के समांतर चलना। इस समय के दौरान यह प्रमुख कहानी आती हैं बयान नागमणि, लाश,रातें,जोखिम,अपना एकांत, मैं, इतने अच्छे दिन,मानसरोवर के हंस आदि इन कहानियों का लेखन कार्य मुंबई में किया।

कमलेश्वर के प्रमुख कहानियों के संग्रह : –

राजा निरवंशियाँ 1957 ई.

कस्बे का आदमी 1957

खोई हुई दिशाएं सन 1963
मांस का दरिया 1966 ई
जिंदा मुर्दे 1961 ई
बयान
मेरी प्रिय कहानियाँ – 1972 ई.
कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियां
जॉर्ज पंचम की नाक
कथा प्रस्थान 1990 ई
इतने अच्छे दिन 1989 ई
कोहरा 1994 ई.
दस प्रतिनिधि कहानियाँ

राजा निरवंशिया कहानी का संक्षेप में वर्णनः – राजा निर्वंसिया कमलेश्वर द्वारा लिखित कहानी संग्रह है। इस कहानी संग्रह में देवा की मां, पानी की तस्वीर धूल उड़ जाती है, सुबह का सपना, मुर्दों की दुनिया, आत्मा की आवाज तथा राजा निरवंशिया हैं। इनमें सबसे ज्यादा प्रसिद्धि पाने वाली कहानी राजा निरवंसियों है। इस कहानी में दो प्रसंग एक साथ चलते हैं एक राजा रानी की कहानी दूसरी जगपति और चंदा की कहानी, मां कहानी सुनाती है। राजा रानी के संदर्भ में मां कहानी सुनाती है कि एक बार राजा शिकार खेलने जाते हैं और लंबे समय तक लौटकर नहीं आते राजा निर्वंशीय कहानी के प्रसंग में जगपति की मुठभेड़ हो जाती है डाकुओं से जाँघ के आर पर गोली भेद देती है दूसरी गोली कूल्ह से होकर निकल जाती है जगपति घायल हो जाता है गंभीर रूप से। गांव से दूर कस्बे में एक सरकारी अस्पताल था उसी में जगपति को ले जाकर भर्ती किया गया था उसकी दवा इस अस्पताल में होने लगी। दवा इतनी महंगी होती है कि एक सामान्य व्यक्ति के क्षमता के बाहर जो कि सरकारी अस्पताल के अलावा दवा लाना संभव नहीं होता है। उसे अस्पताल में उसे अस्पताल की देखरेख वचन सिंह कंपाउंडर करता है। इतनी महंगी दवाइयां के बारे में जगपति जानकर यह पूछता है कि चंदा तुम यह दवा कहां से ला रही हो, चंदा ने जगपति से बताया कि मैं अपने सोने के कंगन को बेच दी हूं। उसी से यह दवाइयां आ रही है जगपति ठीकहो जाता है। उधर कंपाउंड का ट्रांसफर हो जाता है और मैनपुरी के किसी अस्पताल में वह आ जाता है। जगपति के घर आना जाना बच्चन सिंह का लगातार होने लगा। जगपति के पास कोई काम धंधा था नहीं बच्चन सिंह से कुछ पैसे लेकर के लकड़ी का टाल लगा लेता है। एक दिन चंदा से जगपति स्नेहाभिभूत होता है और और उसके सिर के नीचे कंगन जगपति के हाथ लग जाता है और जगपति सारी घटनाक्रम समझ जाता है कि कंगन बेचे नहीं गए बल्कि खुद को बचन

सिंह को सौंप दिया था जगपति गंभीरता वर्तत हुए इस बात की कानों कान खबर चंदा को नहीं लगने दी। दूसरी कहानी में राजा बैलगाड़ी में ढेर सारा सामान लेकर आ रहे थे और रास्ते में गाड़ी की पहिया एक गड्ढे में फंस गई, किसी ने बताया कि जो बालक सकट के दिन पैदा हुआ हो उसकी छवि सुपारी पहिए में छुआ देंगे तो बैलगाड़ी निकल जाएगी। इधर जगपति के ऊपर इतना कर्ज हो गया धीरे–धीरे कि वह पैसे का कर्ज, उत्तरदायित्व का कर्ज, लोगों के ताने–बाने का कर्ज धीरे–धीरे बर्दाश्त करने में असमर्थ होता जा रहा था। एक दिन चंदा और जगपति में अनबन होती है और चंदा मायके चली जाती है। चंदा को मायके में कोई तीसरा मिल जाता है, चंदा को लड़का भी पैदा हो जाता है। इधर जगपति को मुंशी समझता है कि अब किस चीज का लोक लाज तुम्हें है चंदा को भले ना ले आओ लेकिन लड़के को बुला लो। उधर राजा जब महल पहुंचता है तो रानियां खिलखिला कर हंसती रहती हैं और इस रहस्य का उद्‌घाटन होता है कि दोनों बालक आपके ही हैं किंतु राजा को विश्वास नहीं हो रहा था लेकिन समय का फेर है उस कहानी में राजा देवी शक्ति मानकर दोनों लड़के को स्वीकार कर लेते हैं, इस कहानी में जगपति कहता है कि "जगपति कानून को उसने लिखा था किसी ने मुझे मारा नहीं है किसी आदमी ने नहीं मैं जानता हूं कि मेरे जहर की पहचान करने के लिए मेरा सीना चीरा जाएगा उसमें जहर है मैंने अफीम नहीं रुपए खाए हैं उन रूपयों में कर्ज का जहर था उसी ने मुझे मारा था मेरी लाश तब तक न जलाया जाए जब तक चंदा बच्चों को लेकर ना आ जाए बस! "चंदा बाँझ है यह दाग तो उसने छुड़ा दिया लेकिन समाज में वह एक अपराधी की तरह है जिसने शादी के सात बंधन को तोड़ दिया।

कस्बे का आदमी कहानी का संक्षेप में वर्णन :– यह कहानी कमलेश्वर की दूसरी कहानी संग्रह है। नए समय में इनकी कहानी बहुत प्रसिद्ध हुई जिनमें से राजा निर्वंसिया के बाद कस्बे का आदमी नगरीय जीवन की कथा का मर्म बताने वाली आधुनिक कहानी है जब मुंबई में कमलेश्वर थे तभी इस कहानी को लिखा था मुंबई के परिवेश और कस्बाई स्थिति का वर्णन कस्बे का आदमी कहानी में वर्णन किया है। इस कहानी में नगरीय सभ्यता का प्रभाव देखने को मिलता है। कस्बाई संस्कार उनका मनचाहा कथानक होता है। जिस पर उन्होंने अद्वितीय कलमकारी करते नजर आ रहे हैं। इसमें उन्होंने कस्बाई आधुनिकता की झलकी दिखलाते हैं। जिसे पाठक पढ़कर कस्बाई स्थिति का अंदाजा लगा सकता है इस कहानी में ग्रामीण अंचल की विशेषताओं के भी दर्शन होते हैं। इसमें सनातनी वैज्ञानिक, दृष्टिकोण और अंधविश्वास का अभाव है इसी तरह के शहर की जो खास बात होती है उनका भी अभाव है जैसे शहरों याँत्रिकता मशीनीकरण, एकाकीपन और संवेदन शून्यता का भी अभाव मिलता है।

प्राचीन समय मतों धर्मशालाओं मंदिरों दरबारों तथा शहरों से संबंधित था किंतु कस्बाई संस्कार इन सबसे बिल्कुल भिन्न दिखता है। इसमें विषय वस्तु के केंद्र में कस्बाई नगरी अपना तो

धीरे–धीरे समाप्त होने को है जो कि क्रांति का केंद्र हुआ करते थे। सन १९५८ में इस कहानी को लेखबद्ध किया इस कहानी का स्वर तीन पहले की रात गर्मियों के दिन बिछड़े हुए लोग चायघर, सिंखचे, इंसान और हैवान, गाय की चोरी नौकरी पेशा सच और झूठ बेकार आदमी थानेदार साहब तथा कस्बे का आदम तीन दिन पूर्व की रात में 'मीना'को खुद की नौकरी बचाए रखने तथा अमुक व्यक्ति का व्यक्तित्व बनाए रखने का संघर्ष है मनुष्य और दानव इंसान और हैवान में एक युवक की दुकान की घटनाक्रम तथा पुलिस प्रशासन की निष्कृष्टता का विवरण है इस कहानी में केवल दो ही पात्र हैं शिवराज और छोटे गणराज जो आकस्मिक रेल यात्रा करते मिलते हैं इस कहानी में कस्बे के जीवन की मजबूरी व्यवस्था दयनीयता संत्रास का उद्‌घाटन किया गया है इनके कहानियों में आधुनिकता के यथार्थ की संवेदना का दर्शन होता है इस कहानी में ग्रीष्म काल के दिन की शुरुआत कस्बे के संक्रामक मानसिकता से होती है। अंततः इस कहानी के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया गया है कि देहात और शहर के संस्कार में कितना अंतर है कस्बाई समस्या कौन–कौन सी हैं प्रमुख रूप से आधुनिक यथार्थ की मनुष्य के प्रति संवेदना व्यक्त है।

खोई हुई दिशाएं कहानी का संक्षेप में वर्णन :– इस कहानी का प्रकाशन वर्ष १९६३ ई. है। इस कहानी संग्रह में खोई हुई दिशाएं, जॉर्ज पंचम की नाक,पीला गुलाब, एक अश्लील कहानी, प्रेमिका, दिल्ली में एक मौत, एक थी विमला,सांप,ए रुकी हुई जिंदगी, दुख भरी हुई दुनिया तथा पराया कहानी आती हैं। ऐसा जीवन जिसमें दिशाएं खोई हुई हैं एक युवक जो अपने जीवन में अपनी निश्चितता खो चुका है और भटकाव की स्थिति से गुजर रहा है जिसे एकाकीपन बेगानापन और की रास्ता का एहसास हो रहा है यह आज की कहानी मालूम पड़ती है क्योंकि कथा शिल्पी ही यह संदर्भित कर रहा है कि बेरोजगारी संत्रास झेलता युवक किस तरह पीड़ित है इस कहानी में यह भी इंगित किया गया है की वैज्ञानिकता का प्रभाव औद्योगिकरण शहरीकरण ने कैसे एक दूसरे को अलग कर दिया है। जॉर्ज पंचम की कहानी के माध्यम से सरकारी व्यवस्था पर व्यंग्य किया गया है। पराया में कस्बाई परिवेश का रूप परायापन सा लगता है यहां सभी अपने में मस्त हैं व्यस्त हैं। किसी को किसी से कोई आत्मीयता नहीं है ऐसा स्वर इस कहानी में है खासकर पिता पुत्र का सहारा लेकर यह कहानी लिखी गई है। संवेदनशीलता अवश्य केंद्र में रहती है।

मांस का दरिया (1962–63 ई.) : – इस संग्रह में कुल 12 कहानियां संकलित हैं शुद्ध, तलाश, मांस का दरिया, दुखों के रास्ते, ऊपर उठता हुआ मकान, जो लिखा नहीं जाता, दूसरे कुछ नहीं, कोई नहीं, फालतू आदमी, नीली झील और बदनाम गली। मांस का दरिया के इर्द –गिर्द ही कहानी का उद्देश्य रहा है। इसमें एक जुगनू नाम की वेश्या की कथा है जो किसी

कारणवश इस पेशे में आ जाती है और वह उस मोहल्ले की एक जानी पहचानी थी, जो धीरे–धीरे शारीरिक अशक्तता के कारण अपना हुस्न को बैठी है कई बीमारी उसे घेर लेती है। जिसमें उसे एक जांघों के फोड़े ने बिल्कुल परेशान कर दिया अब उसे लोग भी नहीं पसंद करते थे। उसका दाना पानी चलना भी दुश्वार हो गया सेठ साहूकार और निम्न लोग भी अब इसकी जिंदगी नारकीय हो चुकी है भूत वर्तमान की जैसे तैसे जिंदगी गुजर गई किंतु भविष्य की फिक्र उसे लगी रहती उसकी सोच बाद में समान स्त्रियों की बात जीने की होती है इस कहानी में सामाजिक संबंधों की टकराहट से उत्पन्न संवेदनात्मक गहराई और नई समझ की समन्वय की भावना है। अंत में जुगनू यही सोचती है कि और कोई हुनर भी नहीं जिससे जीवन का शेषांश कट सके। इस कहानी का आशय यही है कि सामाजिक संवेदना का बोध प्रत्येक जन सामान्य को हो वह किसी न किसी काम में कुशल हो ताकि ऐसी नारकीय जीवन से बचकर एक यथार्थ जीवन की परिकल्पना किया जा सके। बदनाम गली कहानी 'पर एक सड़क सत्तावन गलियां उपन्यास भी कमलेश्वर ने लिखा है बदनाम बस्ती अंग्रेजी राज्य के विकास के एक सुखी गांव के उजड़ने की कहानी है अंग्रेज पुलिस सुरक्षा के नाम पर उसे गांव को अत्याचार वश नष्ट भ्रष्ट कर देते हैं इसमें संबंध, संवेदना सब नष्ट कर दिया गया है।

कोहरा : – इस कहानी में मनुष्य के दुःख– कष्ट, व्यथा, पीड़ा को अभिव्यक्त किया है। इस कहानी की पृष्ठभूमि विदेशी है। इस कहानी में नायक केपूर्वजों ने दूसरों को सताया था, पीड़ा पहुंचाई थी, चौन, शकून, छीन लिया था। इस कहानी में पूर्वजों के कृत्य के विरोध में यह बताना चाहता है कि जो दूसरों का सुख चौन छीनता है वह भी शकून से नहीं रहता है। इसी श्रेणी में अपने देश, आधी दुनिया हवा की आवाज नहीं, रावल की रेल आदिकहानियाँ आती हैं। ये सभी जीवन की संवेदनाओं से प्रतिबद्ध है इनके कहानियों में । निसंदेह कोई भी कमलेश्वर की कहानियों को पढ़ेगा तो उसे वास्तविक जीवन में जिन समस्याओं को आये दिन इंसान झेल रहा है। उसका एक एक दर्शन इनकी कहानियों में प्राप्त होंगे। कमलेश्वर मानवीय संवेदना, करुणा, सहानुभूति, यथार्थवादी दृष्टिकोण, दुःख पीड़ा, लाचार, वंचित, जनसामान्य, मध्य वर्गीय परिस्थितियों के जीवन चरित्र का उद्घाटन इनके कहानियों में कथानक के रूप में मिलेंगे जो किसी भी व्यक्ति के लिए मार्गदर्शन साबित होगी। व्यक्ति इनकी कहानियों से जीवन की समस्या का समाधान अवश्य प्राप्त करेगा।

कमलेश्वर उपन्यासकार के रूप में :– स्वतंत्रोत्तर हिंदी हिंदी साहित्य जगत में कमलेश्वर एक सफल उपन्यासकार के रूप में भी जाने जाते हैं। मानवीय संवेदना की गहरी पकड़ थी। उपन्यास के केंद्र बिंदु में सामाजिक परिवेश घुला –मिला रहता है। यह सामान्य वर्गों को अपने

उपन्यास का विषय वस्तु के रूप में ग्रहण किए हैं। वास्तविक जीवन की सच्चाई बहुत कड़वी होती है लेकिन कमलेश्वर ने ऐतिहासिक,सामाजि घटनाओ का मिश्रण कर उपन्यास की पृष्ठभूमि से लेकर उपन्यास के सार्थक परिणाम तक लिखते हैं।

कमलेश्वर के प्रमुख उपन्यास –कमलेश्वर के प्रायः सभी उपन्यास छोटे छोटे हैं। यह उपन्यास इस प्रकार हैं –

- एक सड़क सत्तावन गलियां –1959
- डाक बंगला –1959
- लौटे हुए मुसाफिर–1961
- समुद्र में खोया हुआ आदमी–1967
- काली आँधी–1974
- तीसरा आदमी–1976
- आगामी अतीत–1976
- वही बात–1980
- सुबह दोपहर शाम–1982
- रेगिस्तान–1988
- अनवीता अतीत
- अम्मा
- कितने पाकिस्तान
- एक और चन्द्रकांता

निष्कर्ष, कमलेश्वर प्राचीन नैतिक आदर्श और वर्तमान व्यवहारिक मूल्य की द्वंद से उत्पन्न तनाव का वास्तविक तस्वीर अंकित करने में दक्ष हैं। वॉल्टर एस्कॉर्ट के अनुसार –"उपन्यास एक ऐसी कहानी है जिसमें मानव जीवन के अधिकांश वास्तविक अनुभव की एकतानता है। इनसाईक्लोपीडिया के अनुसार–"उपन्यास मानव जीवन के सत्य का यथार्थ के आधार पर वास्तविक चित्रण है"। इस परिभाषा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कमलेश्वर के उपन्यासों की धारा किसी एक पिंड पर आधारित होते हुए भी जीवन के विभिन्न पक्षों को लाभ रूपों में समेटा जा सकता है।"

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 कमलेश्वर वही, मधुकर सिंह, पृष्ठ २६६

2 मेरी प्रिय कहानियां, कमलेश्वर, भूमिका से

3 मेरी प्रिय कहानियां (राजा निरवंशिया), कमलेश्वर, पृष्ठ २६

4 कमलेश्वर का साहित्य और सामाजिक यथार्थ, डॉ धीरज वणकर, पृष्ठ ३५

5 हिन्दोस्ता हमारा, कमलेश्वर, भूमिका नामक उपन्यास से

6 कमलेश्वर की लोकप्रिय कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ 100